

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

भारतीय समाज में पारिवारिक संरचनाओं का बदलता स्वरूप: संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

Indrajeet

(Research Scholar)

सारांश (Abstract)

परिवार मानव समाज की सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जो व्यक्ति के सामाजिकरण, सांस्कृतिक हस्तांतरण, भावनात्मक सुरक्षा तथा आर्थिक सहयोग का आधार प्रदान करती है। भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था को सामाजिक जीवन का प्रमुख आधार माना जाता रहा है। संयुक्त परिवार केवल रक्त संबंधों पर आधारित एक निवास व्यवस्था नहीं थी, बल्कि यह सामूहिक उत्तरदायित्व, पारस्परिक सहयोग, सांस्कृतिक मूल्यों और पीढ़ियों के बीच संबंधों की मजबूत संरचना थी। किंतु आधुनिक समय में औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, रोजगार के नए अवसर, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, वैश्वीकरण और व्यक्तिवादी जीवन मूल्यों के विकास के कारण भारतीय पारिवारिक संरचना में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं।

वर्तमान समय में एकल या न्यूक्लियर परिवारों का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों तक सीमित यह परिवार व्यवस्था आधुनिक जीवन शैली, आर्थिक आवश्यकताओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावना से प्रभावित है। इस परिवर्तन ने जहां व्यक्तियों को निर्णय लेने की स्वतंत्रता, बेहतर जीवन सुविधाएं और व्यक्तिगत विकास के अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर वृद्धजनों की देखभाल, बच्चों के समाजीकरण, सामाजिक समर्थन प्रणाली तथा पारिवारिक संबंधों में दूरी जैसी चुनौतियां भी उत्पन्न की हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय समाज में पारिवारिक संरचनाओं के बदलते स्वरूप का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। इसमें संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण के कारणों, सामाजिक प्रभावों तथा वर्तमान भारतीय समाज में परिवार संस्था के बदलते स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

प्रमुख शब्द (Keywords):

परिवार, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, सामाजिक परिवर्तन, नगरीकरण, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण, समाजशास्त्र।

1. प्रस्तावना (Introduction)

परिवार मानव समाज की सबसे प्राचीन, सार्वभौमिक और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। प्रत्येक समाज में परिवार व्यक्ति के जन्म से लेकर उसके संपूर्ण सामाजिक विकास तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार ही वह प्राथमिक समूह है जहां व्यक्ति पहली बार सामाजिक व्यवहार, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक परंपराएं, भाषा, रीति-रिवाज और सामाजिक भूमिकाओं को सीखता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परिवार केवल जैविक संबंधों पर आधारित व्यक्तियों का समूह नहीं है, बल्कि यह एक संगठित सामाजिक संस्था है, जो समाज की निरंतरता और स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

परिवार व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास का प्रमुख माध्यम होता है। जन्म के बाद व्यक्ति जिस वातावरण में विकसित होता है, वही उसके व्यक्तित्व, विचारों और सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। परिवार सामाजिक नियंत्रण, सुरक्षा, सहयोग और भावनात्मक संतुष्टि प्रदान करने वाली संस्था के रूप में कार्य करता है। इसके माध्यम से समाज के मूल्य और आदर्श एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होते हैं। इस प्रकार परिवार केवल व्यक्तिगत जीवन की आवश्यकता नहीं है, बल्कि सामाजिक व्यवस्था की आधारभूत संरचना भी है।

भारतीय समाज में परिवार का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय संस्कृति में परिवार को केवल पति-पत्नी और बच्चों तक सीमित संबंध नहीं माना गया, बल्कि इसे व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था के रूप में देखा गया है। भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था का व्यापक प्रभाव रहा है। संयुक्त परिवार भारतीय सामाजिक जीवन की एक विशिष्ट विशेषता रही है, जिसमें एक ही परिवार की कई पीढ़ियां—जैसे माता-पिता, विवाहित पुत्र, पुत्रवधू, पोते-पोतियां और अन्य सदस्य—एक साथ निवास करते थे।

संयुक्त परिवार व्यवस्था केवल साथ रहने की व्यवस्था नहीं थी, बल्कि यह सामूहिक उत्तरदायित्व, पारस्परिक सहयोग और सामाजिक सुरक्षा की प्रणाली थी। इस व्यवस्था में परिवार के सभी सदस्य अपनी-अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का निर्वहन करते थे। परिवार का मुखिया महत्वपूर्ण

निर्णयों का नेतृत्व करता था तथा परिवार के आर्थिक और सामाजिक मामलों का संचालन करता था। परिवार के संसाधनों का सामूहिक उपयोग किया जाता था और सभी सदस्यों की आवश्यकताओं को परिवार की सामूहिक आय से पूरा किया जाता था।

संयुक्त परिवार व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि यह सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती थी। वृद्धजनों को सम्मान और देखभाल प्राप्त होती थी, बच्चों को अनेक पीढ़ियों के अनुभवों और संस्कारों से सीखने का अवसर मिलता था तथा संकट के समय परिवार के सदस्य एक-दूसरे का सहयोग करते थे। इस व्यवस्था ने भारतीय समाज में सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता और पारिवारिक मूल्यों को मजबूत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हालांकि आधुनिक समय में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने भारतीय परिवार व्यवस्था के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, शिक्षा का विस्तार, रोजगार के नए अवसर और बदलती जीवन शैली ने पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था को प्रभावित किया है। औद्योगीकरण के कारण रोजगार के अवसर मुख्य रूप से शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों में केंद्रित होने लगे, जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर लोगों का पलायन बढ़ा। रोजगार एवं शिक्षा के कारण युवा पीढ़ी अपने मूल स्थानों से दूर रहने लगी, जिससे छोटे परिवारों अर्थात् न्यूक्लियर परिवारों का विकास हुआ।

नगरीकरण ने भी पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। शहरों में सीमित आवासीय सुविधाएं, अधिक जीवन-यापन लागत और तेज जीवन शैली के कारण छोटे परिवार अधिक व्यावहारिक माने जाने लगे। इसके अतिरिक्त शिक्षा और आधुनिक विचारधारा ने व्यक्तियों में आत्मनिर्भरता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वयं निर्णय लेने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। वर्तमान पीढ़ी पारंपरिक पारिवारिक नियंत्रण की अपेक्षा व्यक्तिगत उपलब्धियों, करियर विकास और स्वतंत्र जीवन शैली को अधिक महत्व देने लगी है।

महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता ने भी परिवार के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। आधुनिक समय में महिलाएं शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। इससे परिवार के भीतर लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन आया है और पति-पत्नी आधारित छोटे परिवारों को बढ़ावा मिला है। कामकाजी दंपतियों के लिए न्यूक्लियर परिवार कई परिस्थितियों में अधिक सुविधाजनक दिखाई देता है।

वैश्वीकरण और आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने भी पारिवारिक मूल्यों को प्रभावित किया है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निजी उपलब्धि और जीवन स्तर में सुधार को अधिक महत्व दिया जाने लगा

है। इसके परिणामस्वरूप सामूहिकता आधारित पारिवारिक व्यवस्था के स्थान पर व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों का विकास हुआ है।

हालांकि यह परिवर्तन परिवार संस्था के समाप्त होने का संकेत नहीं है, बल्कि परिवार के स्वरूप में परिवर्तन को दर्शाता है। भारतीय समाज में परिवार आज भी महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था बना हुआ है, लेकिन उसकी संरचना, कार्य और भूमिकाओं में परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ता संक्रमण आधुनिक सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो भारतीय समाज में हो रहे व्यापक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों को प्रतिबिंबित करता है।

इसलिए वर्तमान समय में यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि पारिवारिक संरचनाओं में हो रहे परिवर्तनों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझा जाए तथा यह विश्लेषण किया जाए कि न्यूक्लियर परिवारों का बढ़ता प्रचलन भारतीय समाज, सामाजिक संबंधों और पारिवारिक मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है।

2. शोध समस्या (Research Problem)

भारतीय समाज में पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था लंबे समय तक सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक जीवन का प्रमुख आधार रही है। संयुक्त परिवार ने आर्थिक सहयोग, सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक संरक्षण और पीढ़ियों के बीच संबंधों को मजबूत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किंतु वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं के कारण संयुक्त परिवार व्यवस्था में परिवर्तन दिखाई दे रहा है और एकल अथवा न्यूक्लियर परिवारों का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है।

आधुनिक समाज में परिवार के स्वरूप में हो रहे इस परिवर्तन ने अनेक सामाजिक प्रश्नों को जन्म दिया है। जहां एक ओर न्यूक्लियर परिवार व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और आधुनिक जीवन शैली को बढ़ावा देते हैं, वहीं दूसरी ओर इनके कारण पारंपरिक पारिवारिक सहयोग, वृद्धजनों की देखभाल, बच्चों के समाजीकरण और सामाजिक संबंधों में परिवर्तन जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं।

इस शोध की प्रमुख समस्या यह समझना है कि भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था के कमजोर होने और न्यूक्लियर परिवारों के बढ़ने के पीछे कौन-कौन से सामाजिक, आर्थिक और

सांस्कृतिक कारक जिम्मेदार हैं तथा इन परिवर्तनों का समाज और परिवार के सदस्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

इस संदर्भ में अध्ययन की प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैं:

1. संयुक्त परिवार व्यवस्था के कमजोर होने के प्रमुख कारण क्या हैं?
2. औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा, रोजगार और वैश्वीकरण ने पारिवारिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित किया है?
3. किन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों ने न्यूक्लियर परिवारों के विकास को बढ़ावा दिया है?
4. एकल परिवारों का भारतीय सामाजिक जीवन, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?
5. क्या न्यूक्लियर परिवार आधुनिक भारतीय समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी पारिवारिक व्यवस्था है?

इन प्रश्नों के माध्यम से प्रस्तुत अध्ययन भारतीय परिवार संस्था में हो रहे परिवर्तनों को समझने तथा उनके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

3. शोध उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में पारिवारिक संरचनाओं में हो रहे परिवर्तन तथा संयुक्त परिवार से एकल (न्यूक्लियर) परिवारों की ओर बढ़ते संक्रमण का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है। परिवार संस्था में होने वाले परिवर्तन केवल निवास व्यवस्था में बदलाव नहीं हैं, बल्कि ये सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तनों को भी प्रदर्शित करते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक सामाजिक परिस्थितियों ने भारतीय परिवार के स्वरूप, कार्यों और संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया है।

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. भारतीय पारिवारिक संरचना के ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन करना

इस शोध का पहला उद्देश्य भारतीय परिवार व्यवस्था के ऐतिहासिक विकास को समझना है। भारतीय समाज में परिवार हमेशा से सामाजिक संगठन की महत्वपूर्ण इकाई रहा है। विशेष रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था ने भारतीय सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस उद्देश्य के अंतर्गत संयुक्त परिवार की संरचना, विशेषताओं, कार्यों तथा सामाजिक महत्व का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि पारंपरिक भारतीय

परिवार व्यवस्था किस प्रकार सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम रही है।

2. संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर परिवर्तन के कारणों का विश्लेषण करना

इस अध्ययन का दूसरा उद्देश्य उन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों का विश्लेषण करना है जिनके कारण भारतीय समाज में संयुक्त परिवारों का प्रभाव कम हुआ है और न्यूक्लियर परिवारों का विकास हुआ है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, रोजगार के नए अवसर, शिक्षा का विस्तार, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, वैश्वीकरण और आधुनिक जीवन शैली जैसे कारकों ने परिवार संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इस उद्देश्य के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि इन कारकों ने पारिवारिक संबंधों और जीवन शैली को किस प्रकार प्रभावित किया है।

3. सामाजिक परिवर्तन के कारकों का पारिवारिक व्यवस्था पर प्रभाव समझना

परिवार एक गतिशील सामाजिक संस्था है, जो समाज में होने वाले परिवर्तनों से प्रभावित होती है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं जैसे आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, तकनीकी विकास, शिक्षा और आर्थिक परिवर्तन परिवार संस्था को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं। इसके अंतर्गत यह अध्ययन किया जाएगा कि बदलती सामाजिक परिस्थितियों ने पारिवारिक भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और संबंधों में किस प्रकार परिवर्तन किया है।

4. न्यूक्लियर परिवारों के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना

इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य एकल परिवारों के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना है। न्यूक्लियर परिवारों ने जहां व्यक्तियों को स्वतंत्रता, व्यक्तिगत निर्णय लेने की क्षमता और बेहतर जीवन नियोजन की सुविधा प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर इनके कारण सामाजिक अलगाव, वृद्धजनों की देखभाल की समस्या, बच्चों के समाजीकरण में परिवर्तन और पारिवारिक सहयोग में कमी जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं। इस उद्देश्य के अंतर्गत एकल परिवारों के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया जाएगा।

5. वर्तमान भारतीय समाज में परिवार संस्था की बदलती भूमिका का मूल्यांकन करना

इस शोध का अंतिम उद्देश्य वर्तमान भारतीय समाज में परिवार संस्था की बदलती भूमिका का मूल्यांकन करना है। आधुनिक परिस्थितियों में परिवार के स्वरूप, कार्य और महत्व में परिवर्तन आया है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि वर्तमान समय में परिवार किस प्रकार सामाजिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक संस्था के रूप में अपनी भूमिका निभा

रहा है। साथ ही यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि भविष्य में भारतीय परिवार व्यवस्था किस दिशा में विकसित हो सकती है।

5. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

परिवार और सामाजिक परिवर्तन समाजशास्त्र के प्रमुख अध्ययन क्षेत्रों में से एक रहे हैं। विभिन्न समाजशास्त्रियों, मानवशास्त्रियों और सामाजिक विचारकों ने परिवार संस्था की संरचना, कार्यो तथा समय के साथ उसमें होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया है। साहित्य समीक्षा के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाता है कि पूर्ववर्ती विद्वानों ने परिवार, सामाजिक परिवर्तन और पारिवारिक संरचना के बदलावों को किस प्रकार देखा और समझा है।

एमिल दुर्खीम ने सामाजिक संस्थाओं को समाज में एकता और व्यवस्था बनाए रखने वाला महत्वपूर्ण माध्यम माना। उनके अनुसार परिवार जैसी सामाजिक संस्थाएं समाज के नैतिक मूल्यों, सामूहिक चेतना और सामाजिक एकजुटता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। दुर्खीम का मानना था कि समाज के विकास के साथ सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप और कार्यो में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। पारंपरिक समाजों में जहां सामूहिक मूल्यों और संबंधों का महत्व अधिक होता है, वहीं आधुनिक समाजों में व्यक्तिवादी प्रवृत्तियां विकसित होती हैं। इस दृष्टिकोण से परिवार संरचना में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक विकास की प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है। टैल्कोट पार्सन्स ने आधुनिक औद्योगिक समाज में परिवार की बदलती भूमिका का विश्लेषण किया। उन्होंने अपने संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत बताया कि औद्योगिक समाज में न्यूक्लियर परिवार अधिक उपयुक्त होता है क्योंकि यह सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है। पार्सन्स के अनुसार आधुनिक समाज में रोजगार और शिक्षा के अवसरों के कारण लोगों को अधिक गतिशील होना पड़ता है, जिसके लिए छोटा परिवार अधिक अनुकूल होता है। उनके अनुसार न्यूक्लियर परिवार बच्चों के प्राथमिक समाजीकरण और वयस्क व्यक्तियों के भावनात्मक सहयोग जैसे प्रमुख कार्यो को प्रभावी रूप से पूरा करता है।

इरावती कर्वे ने भारतीय परिवार व्यवस्था और नातेदारी संबंधों का विस्तृत अध्ययन किया। उन्होंने भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की संरचना, कार्यप्रणाली और सामाजिक महत्व को समझने का प्रयास किया। उनके अनुसार भारतीय परिवार केवल रक्त संबंधों पर आधारित संस्था नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों का जटिल तंत्र है। उन्होंने बताया कि

भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था में विभिन्न पीढ़ियों के बीच सहयोग, जिम्मेदारी और सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तांतरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एम. एन. श्रीनिवास ने भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रियाओं का अध्ययन किया। उनके अनुसार भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तन पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करते हैं। शिक्षा, नगरीकरण और आर्थिक विकास ने भारतीय परिवार व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव उत्पन्न किए हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय परिवार परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर परिवर्तनशील अवस्था में है।

एंड्र्यू चेरलिन ने आधुनिक समाजों में परिवार के बदलते स्वरूप का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के कारण परिवार के पारंपरिक कार्यों में बदलाव आया है। आधुनिक परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, भावनात्मक संबंध और समानता आधारित संबंधों को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। उनके अनुसार परिवार संस्था समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को पुनर्गठित कर रही है।

ए. एम. शाह ने भारतीय परिवारों में परिवर्तन और निरंतरता का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि भारतीय समाज में संयुक्त परिवार और एकल परिवार को एक-दूसरे के पूर्ण विरोधी रूप में नहीं देखा जा सकता। कई परिस्थितियों में परिवार संरचना में परिवर्तन के बावजूद पारिवारिक संबंध और उत्तरदायित्व बने रहते हैं। उनके अनुसार भारतीय परिवार व्यवस्था में परिवर्तन के साथ-साथ निरंतरता भी दिखाई देती है।

भारतीय परिवार व्यवस्था पर किए गए विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि परिवार एक स्थिर और अपरिवर्तनशील संस्था नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार निरंतर बदलती रहती है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा, वैश्वीकरण और आधुनिक जीवन शैली ने परिवार के स्वरूप और कार्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं।

पूर्ववर्ती साहित्य से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर परिवार की ओर बढ़ता परिवर्तन केवल पारिवारिक संरचना का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक परिवर्तन का परिणाम है। आधुनिक भारतीय समाज में परिवार संस्था अपनी पारंपरिक भूमिका को नए सामाजिक संदर्भों के अनुसार परिवर्तित कर रही है। प्रस्तुत शोध इसी परिवर्तनशील प्रक्रिया का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

6. संयुक्त परिवार व्यवस्था: अवधारणा एवं विशेषताएँ

संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक प्राचीन और महत्वपूर्ण पारिवारिक व्यवस्था रही है। भारतीय सामाजिक संरचना में संयुक्त परिवार का विशेष स्थान रहा है, क्योंकि यह केवल एक निवास व्यवस्था नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक संबंधों की एक व्यापक प्रणाली है। परंपरागत भारतीय समाज में संयुक्त परिवार को सामाजिक संगठन की मूल इकाई माना जाता था, जहां परिवार के अनेक सदस्य एक साथ रहकर जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करते थे।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से संयुक्त परिवार उस परिवार को कहा जाता है जिसमें एक ही वंश या रक्त संबंध से जुड़े कई सदस्य एक साथ निवास करते हैं, सामान्य आर्थिक संसाधनों का उपयोग करते हैं और पारिवारिक उत्तरदायित्वों को सामूहिक रूप से निभाते हैं। सामान्यतः इसमें माता-पिता, उनके विवाहित पुत्र, पुत्रवधुएं, अविवाहित पुत्र-पुत्रियां और पोते-पोतियां शामिल होते हैं। हालांकि भारतीय समाज के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों में संयुक्त परिवार के स्वरूप में भिन्नताएं देखने को मिलती हैं।

भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था का आधार सामूहिकता, सहयोग, पारस्परिक निर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित रहा है। इसमें व्यक्ति की अपेक्षा परिवार के सामूहिक हितों को अधिक महत्व दिया जाता था। परिवार के सदस्य अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और इच्छाओं को परिवार के व्यापक हितों के साथ जोड़कर देखते थे। यही कारण है कि संयुक्त परिवार लंबे समय तक भारतीय समाज में सामाजिक स्थिरता और सुरक्षा का प्रमुख माध्यम बना रहा।

संयुक्त परिवार की प्रमुख विशेषताएँ

1. सामूहिक जीवन व्यवस्था

संयुक्त परिवार की सबसे प्रमुख विशेषता सामूहिक जीवन व्यवस्था है। इसमें परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहते हैं और दैनिक जीवन की गतिविधियों में एक-दूसरे के साथ जुड़े रहते हैं। परिवार के सदस्य भोजन, आवास, आर्थिक संसाधनों और सामाजिक गतिविधियों को साझा करते हैं।

इस व्यवस्था में व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा परिवार के सामूहिक हितों को प्राथमिकता दी जाती है। परिवार के बड़े सदस्य छोटे सदस्यों का मार्गदर्शन करते हैं और निर्णय लेने की प्रक्रिया में

उनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस प्रकार संयुक्त परिवार सहयोग और सामूहिक भावना को मजबूत करता है।

2. आर्थिक सहयोग

संयुक्त परिवार व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार आर्थिक सहयोग है। इसमें परिवार के सभी कमाने वाले सदस्य अपनी आय को परिवार के सामूहिक संसाधनों में योगदान देते हैं और परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति सामूहिक रूप से की जाती है।

इस व्यवस्था में आर्थिक जिम्मेदारियां केवल एक व्यक्ति पर निर्भर नहीं होतीं, बल्कि परिवार के सभी सक्षम सदस्य अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देते हैं। इससे परिवार के कमजोर सदस्यों, बच्चों, वृद्धों और बेरोजगार व्यक्तियों को आर्थिक सुरक्षा प्राप्त होती है।

कृषि आधारित भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था विशेष रूप से प्रभावी रही, क्योंकि परिवार के सभी सदस्य कृषि कार्यों और अन्य पारंपरिक व्यवसायों में सहयोग करते थे। इससे उत्पादन और संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव होता था।

3. सामाजिक सुरक्षा

संयुक्त परिवार सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण संस्था रही है। जीवन में आने वाली कठिन परिस्थितियों जैसे बीमारी, बेरोजगारी, आर्थिक संकट या अन्य समस्याओं के समय परिवार के सदस्य एक-दूसरे का सहयोग करते हैं।

वृद्धजनों को परिवार में सम्मान और देखभाल प्राप्त होती है। बच्चों के पालन-पोषण में केवल माता-पिता ही नहीं बल्कि परिवार के अन्य सदस्य भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार संयुक्त परिवार व्यक्ति को भावनात्मक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है।

संयुक्त परिवार में व्यक्ति को अकेलेपन की समस्या कम महसूस होती है, क्योंकि उसके आसपास हमेशा परिवार के सदस्य उपस्थित रहते हैं। यह व्यवस्था सामाजिक सहयोग और भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत बनाती है।

4. सांस्कृतिक हस्तांतरण

संयुक्त परिवार सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और सामाजिक ज्ञान के हस्तांतरण का महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। परिवार के बुजुर्ग सदस्य बच्चों को पारिवारिक परंपराओं, रीति-रिवाजों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक व्यवहारों की शिक्षा देते हैं।

बच्चे परिवार के वरिष्ठ सदस्यों के अनुभवों से सीखते हैं और समाज की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाते हैं। त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों और पारिवारिक परंपराओं का पालन संयुक्त परिवारों में अधिक प्रभावी रूप से होता है।

इस प्रकार संयुक्त परिवार केवल जैविक संबंधों का समूह नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने वाली सामाजिक संस्था भी है।

5. पारिवारिक नेतृत्व एवं निर्णय व्यवस्था

संयुक्त परिवार में सामान्यतः परिवार के सबसे वरिष्ठ सदस्य को नेतृत्व की भूमिका प्राप्त होती है। वह परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में मार्गदर्शन प्रदान करता है और परिवार के सदस्यों के बीच समन्वय स्थापित करता है।

परिवार के मुखिया की भूमिका आर्थिक प्रबंधन, सामाजिक संबंधों और पारिवारिक विवादों के समाधान में महत्वपूर्ण होती है। हालांकि आधुनिक समय में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रभाव के कारण संयुक्त परिवारों में निर्णय प्रक्रिया अधिक सहभागी होती जा रही है।

6. श्रम विभाजन और उत्तरदायित्व

संयुक्त परिवार में परिवार के सदस्यों के बीच कार्यों का विभाजन होता है। पुरुष आर्थिक गतिविधियों में योगदान देते हैं, जबकि महिलाएं घरेलू कार्यों और परिवार के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालांकि आधुनिक समय में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के कारण यह भूमिका बदल रही है।

कार्य विभाजन के कारण परिवार के सभी सदस्यों की जिम्मेदारियां स्पष्ट होती हैं और परिवार का संचालन अधिक व्यवस्थित रूप से होता है।

7. भावनात्मक संबंध एवं पारस्परिक सहयोग

संयुक्त परिवार में सदस्यों के बीच भावनात्मक संबंध मजबूत होते हैं। परिवार के सदस्य सुख-दुख में एक-दूसरे का साथ देते हैं। बच्चों को माता-पिता के अतिरिक्त अन्य सदस्यों से भी प्रेम, अनुशासन और मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

यह व्यवस्था परिवार के सदस्यों में अपनापन, सहयोग और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है।

7. संयुक्त परिवार के विघटन के कारण

भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था लंबे समय तक सामाजिक जीवन का प्रमुख आधार रही है, लेकिन आधुनिक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं ने इस व्यवस्था को काफी हद तक प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार के विघटन का अर्थ परिवार संस्था का समाप्त होना नहीं है, बल्कि पारिवारिक संरचना और संबंधों के स्वरूप में परिवर्तन आना है। वर्तमान समय में एकल या न्यूक्लियर परिवारों का बढ़ता प्रचलन अनेक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का परिणाम है।

संयुक्त परिवार के कमजोर होने के पीछे कई कारण जिम्मेदार हैं, जिनमें औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, वैश्वीकरण और आधुनिक जीवन शैली प्रमुख हैं। इन कारकों ने व्यक्ति की सोच, जीवन मूल्यों और पारिवारिक संबंधों को प्रभावित किया है।

7.1 औद्योगीकरण (Industrialization)

औद्योगीकरण संयुक्त परिवार व्यवस्था में परिवर्तन का एक प्रमुख कारण रहा है। औद्योगिक विकास के साथ रोजगार के नए अवसर मुख्य रूप से शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों में विकसित हुए। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग बेहतर रोजगार, आय और जीवन सुविधाओं की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने लगे।

औद्योगिक क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अक्सर अपने परिवार से दूर रहना पड़ा। शहरों में सीमित आवासीय सुविधाएं, अधिक किराया और उच्च जीवन-यापन लागत के कारण बड़े संयुक्त परिवारों के साथ रहना कठिन हो गया। परिणामस्वरूप छोटे परिवारों अर्थात् पति-पत्नी और बच्चों तक सीमित परिवारों का विकास हुआ।

औद्योगीकरण ने आर्थिक संरचना को भी बदला। पारंपरिक कृषि आधारित अर्थव्यवस्था, जहां संयुक्त परिवार की उपयोगिता अधिक थी, धीरे-धीरे कमजोर हुई और वेतन आधारित अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। अब व्यक्ति की आय उसकी व्यक्तिगत योग्यता और रोजगार पर निर्भर होने लगी, जिससे सामूहिक आर्थिक व्यवस्था की आवश्यकता कम महसूस होने लगी।

इस प्रकार औद्योगीकरण ने परिवार के आर्थिक आधार, निवास व्यवस्था और सामाजिक संबंधों में परिवर्तन उत्पन्न करके संयुक्त परिवार के विघटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

7.2 नगरीकरण (Urbanization)

नगरीकरण संयुक्त परिवार व्यवस्था में परिवर्तन का दूसरा महत्वपूर्ण कारण है। आधुनिक समय में शहर आर्थिक, शैक्षणिक और रोजगार गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बन गए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर बढ़ते पलायन ने पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है।

शहरी जीवन शैली ग्रामीण जीवन से काफी अलग होती है। शहरों में सीमित स्थान, तेज जीवन गति, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के कारण छोटे परिवार अधिक व्यावहारिक माने जाते हैं। संयुक्त परिवार के लिए बड़े आवास की आवश्यकता होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में छोटे मकानों और महंगे आवास के कारण न्यूक्लियर परिवारों को प्राथमिकता दी जाने लगी।

नगरीकरण ने व्यक्तियों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की भावना को भी बढ़ावा दिया है। शहरों में रहने वाले लोग अपने करियर, शिक्षा और व्यक्तिगत विकास को अधिक महत्व देने लगे हैं। इससे पारंपरिक पारिवारिक नियंत्रण और सामूहिक निर्णय व्यवस्था कमजोर हुई है।

इस प्रकार नगरीकरण ने न केवल भौतिक परिस्थितियों को बदला है, बल्कि व्यक्तियों की सोच और जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन उत्पन्न किया है।

7.3 शिक्षा का विस्तार (Expansion of Education)

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा के विस्तार ने व्यक्तियों के विचारों, दृष्टिकोण और जीवन संबंधी निर्णयों को प्रभावित किया है। आधुनिक शिक्षा ने लोगों में तार्किक सोच, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत अधिकारों की भावना को मजबूत किया है।

विशेष रूप से युवा पीढ़ी शिक्षा के माध्यम से नए अवसरों और आधुनिक जीवन शैली से परिचित हुई है। वे अपने करियर, जीवन साथी और जीवन शैली से संबंधित निर्णय स्वयं लेना पसंद करने लगे हैं। इससे पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था में परिवार के वरिष्ठ सदस्यों के नियंत्रण की भूमिका कम हुई है।

शिक्षा ने व्यक्तियों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया और रोजगार के अवसरों तक पहुंच प्रदान की। आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण युवाओं में अलग रहने और स्वतंत्र जीवन जीने की प्रवृत्ति बढ़ी।

हालांकि शिक्षा ने परिवार संस्था को कमजोर नहीं किया है, बल्कि परिवार के स्वरूप और कार्यों में परिवर्तन किया है। आधुनिक शिक्षित परिवारों में संबंधों का आधार केवल परंपरा नहीं बल्कि आपसी समझ, समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता भी बन गया है।

7.4 महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता (Economic Independence of Women)

महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में वृद्धि ने पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। पारंपरिक संयुक्त परिवारों में महिलाओं की भूमिका मुख्य रूप से घरेलू कार्यों और परिवार की देखभाल तक सीमित थी। लेकिन आधुनिक समय में महिलाएं शिक्षा प्राप्त कर रोजगार और आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं।

आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं को निर्णय लेने की क्षमता और आत्मनिर्भरता प्रदान की है। अब महिलाएं परिवार के आर्थिक निर्णयों, बच्चों की शिक्षा और जीवन शैली से संबंधित मामलों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

कामकाजी दंपतियों के लिए न्यूक्लियर परिवार कई बार अधिक सुविधाजनक माना जाता है क्योंकि इसमें पति-पत्नी अपने समय, संसाधनों और जिम्मेदारियों का बेहतर प्रबंधन कर सकते हैं। संयुक्त परिवार में मौजूद पारंपरिक भूमिकाएं और अपेक्षाएं कई बार आधुनिक कामकाजी महिलाओं के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं।

इसके अतिरिक्त महिलाओं में समानता और व्यक्तिगत पहचान की भावना के विकास ने भी पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है। इस प्रकार महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर परिवार की ओर बढ़ते परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक बनी है।

7.5 वैश्वीकरण और आधुनिक जीवन शैली (Globalization and Modern Lifestyle)

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। वैश्विक संचार, तकनीकी विकास और अंतरराष्ट्रीय संस्कृति के प्रभाव ने लोगों की जीवन शैली, सोच और पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन उत्पन्न किया है।

आधुनिक समाज में व्यक्तिगत उपलब्धि, करियर विकास, आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत संतुष्टि को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने भी व्यक्तियों की आवश्यकताओं और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को बदला है।

वैश्वीकरण के कारण नई पीढ़ी अधिक गतिशील और स्वतंत्र विचारों वाली हुई है। युवा शिक्षा और रोजगार के लिए विभिन्न स्थानों पर जाने लगे हैं, जिससे पारिवारिक निवास व्यवस्था में परिवर्तन आया है। पारंपरिक सामूहिकता की जगह व्यक्तिगत निर्णय और निजी जीवन को अधिक महत्व मिलने लगा है।

हालांकि वैश्वीकरण ने परिवार संस्था को समाप्त नहीं किया है, बल्कि उसके स्वरूप को परिवर्तित किया है। आधुनिक परिवारों में पारिवारिक संबंध बने हुए हैं, लेकिन उनकी प्रकृति और कार्य करने का तरीका बदल गया है।

8. न्यूक्लियर परिवारों का विकास और विशेषताएँ

आधुनिक समाज में न्यूक्लियर या एकल परिवारों का विकास सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया का परिणाम है। न्यूक्लियर परिवार वह परिवार होता है जिसमें मुख्य रूप से पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। इसमें विस्तृत परिवार के अन्य सदस्य जैसे दादा-दादी, चाचा-चाची, भाई-बहन या अन्य रिश्तेदार सामान्यतः स्थायी रूप से साथ नहीं रहते हैं। यह परिवार व्यवस्था आधुनिक औद्योगिक और शहरी समाजों में अधिक प्रचलित दिखाई देती है।

भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था का प्रभुत्व रहा है, लेकिन आधुनिक समय में सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में आए परिवर्तनों ने न्यूक्लियर परिवारों के विकास को बढ़ावा दिया है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, रोजगार की गतिशीलता, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और बदलती जीवन शैली ने परिवार के स्वरूप को प्रभावित किया है।

न्यूक्लियर परिवारों का विकास केवल भौगोलिक अलगाव का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक मूल्यों और पारिवारिक संबंधों में आए परिवर्तन को भी दर्शाता है। आधुनिक समाज में व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता, करियर विकास और जीवन संबंधी निर्णयों को अधिक महत्व देने लगा है। इसके परिणामस्वरूप छोटे परिवारों की अवधारणा को स्वीकार्यता मिली है।

न्यूक्लियर परिवारों में पति-पत्नी और बच्चों के बीच संबंध अधिक प्रत्यक्ष और केंद्रित होते हैं। परिवार के निर्णय सामान्यतः पति-पत्नी द्वारा मिलकर लिए जाते हैं और बाहरी पारिवारिक हस्तक्षेप अपेक्षाकृत कम होता है। इस प्रकार यह परिवार व्यवस्था आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई है।

न्यूक्लियर परिवारों की प्रमुख विशेषताएँ

1. सीमित सदस्यों वाला परिवार

न्यूक्लियर परिवार की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी सीमित सदस्य संख्या है। इसमें सामान्यतः केवल पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। परिवार का आकार छोटा होने के कारण सदस्यों के बीच प्रत्यक्ष संपर्क और व्यक्तिगत संबंध अधिक मजबूत हो सकते हैं।

छोटे परिवारों में संसाधनों का प्रबंधन अपेक्षाकृत आसान होता है। माता-पिता बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। आधुनिक शहरी जीवन

में सीमित स्थान और व्यस्त जीवन शैली के कारण भी छोटे परिवार अधिक उपयुक्त माने जाते हैं।

2. व्यक्तिगत निर्णय लेने की स्वतंत्रता

न्यूक्लियर परिवारों में व्यक्तिगत निर्णय लेने की स्वतंत्रता अधिक होती है। पति-पत्नी अपने जीवन, करियर, बच्चों की शिक्षा, आर्थिक योजनाओं और अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर स्वयं निर्णय ले सकते हैं।

संयुक्त परिवारों में जहां निर्णय अक्सर परिवार के वरिष्ठ सदस्यों की सहमति और परंपराओं के अनुसार लिए जाते थे, वहीं न्यूक्लियर परिवारों में व्यक्तिगत पसंद और आवश्यकताओं को अधिक महत्व दिया जाता है। इससे व्यक्तियों में आत्मनिर्भरता और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

हालांकि अत्यधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता कभी-कभी पारिवारिक सहयोग और सामूहिक भावना को प्रभावित कर सकती है, इसलिए स्वतंत्रता और पारिवारिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन आवश्यक है।

3. आर्थिक आत्मनिर्भरता

न्यूक्लियर परिवारों की एक महत्वपूर्ण विशेषता आर्थिक आत्मनिर्भरता है। इस परिवार व्यवस्था में पति-पत्नी सामान्यतः अपनी आय और खर्च का प्रबंधन स्वयं करते हैं। परिवार के आर्थिक निर्णय बाहरी सदस्यों पर निर्भर नहीं होते।

आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण परिवार अपने संसाधनों का उपयोग अपनी आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार कर सकता है। यह व्यवस्था विशेष रूप से कामकाजी दंपतियों के लिए सुविधाजनक होती है, क्योंकि वे अपनी आय, बचत और निवेश संबंधी निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकते हैं।

हालांकि न्यूक्लियर परिवारों में आर्थिक जिम्मेदारियां भी सीमित सदस्यों पर केंद्रित होती हैं। बीमारी, बेरोजगारी या आर्थिक संकट की स्थिति में संयुक्त परिवार जैसी सामूहिक सहायता उपलब्ध नहीं होती।

4. निजी जीवन को अधिक महत्व

न्यूक्लियर परिवारों में व्यक्तिगत और निजी जीवन को अधिक महत्व दिया जाता है। पति-पत्नी अपने संबंधों, बच्चों के पालन-पोषण और व्यक्तिगत लक्ष्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

आधुनिक समाज में व्यक्ति अपने करियर, व्यक्तिगत विकास और जीवन शैली को महत्वपूर्ण मानता है। न्यूक्लियर परिवार इस प्रकार की जीवन शैली के लिए अधिक अनुकूल माना जाता है क्योंकि इसमें व्यक्ति को अपने निर्णयों और गतिविधियों के लिए अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। यह व्यवस्था पति-पत्नी के बीच भावनात्मक संबंधों को मजबूत करने में सहायक हो सकती है, क्योंकि परिवार का मुख्य केंद्र उनका आपसी संबंध और बच्चों का विकास होता है।

5. कम पारिवारिक नियंत्रण

न्यूक्लियर परिवारों में पारिवारिक नियंत्रण अपेक्षाकृत कम होता है। परिवार के सदस्य अपने व्यक्तिगत जीवन और निर्णयों में अधिक स्वतंत्र होते हैं। पारंपरिक संयुक्त परिवारों में जहां परिवार के वरिष्ठ सदस्यों का प्रभाव अधिक होता था, वहीं न्यूक्लियर परिवारों में पति-पत्नी अपने निर्णय स्वयं लेते हैं।

कम पारिवारिक नियंत्रण से व्यक्तियों को अपनी इच्छाओं और क्षमताओं के अनुसार जीवन जीने का अवसर मिलता है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी इसे व्यक्तिगत विकास और स्वतंत्र पहचान के लिए महत्वपूर्ण मानती है।

हालांकि कम पारिवारिक नियंत्रण के कारण कभी-कभी व्यक्तियों में सामाजिक अलगाव और पारिवारिक सहयोग की कमी जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं।

9. पारिवारिक परिवर्तन के सामाजिक प्रभाव

परिवार एक गतिशील सामाजिक संस्था है, जो समय के साथ बदलती सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार अपने स्वरूप में परिवर्तन करती रहती है। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर परिवार की ओर बढ़ता परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इस परिवर्तन ने व्यक्ति, परिवार और समाज के संबंधों को प्रभावित किया है।

न्यूक्लियर परिवारों के विकास ने जहां कई सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं, वहीं इसके कुछ नकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। आधुनिक परिवार व्यवस्था ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया है, लेकिन दूसरी ओर वृद्धजनों की स्थिति, बच्चों के समाजीकरण और सामाजिक सहयोग की व्यवस्था में भी परिवर्तन आया है।

सकारात्मक प्रभाव (Positive Effects)

1. व्यक्तिगत स्वतंत्रता (Individual Freedom)

न्यूक्लियर परिवारों का एक प्रमुख सकारात्मक प्रभाव व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि है। छोटे परिवारों में व्यक्ति को अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने की अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। पति-पत्नी अपने करियर, बच्चों की शिक्षा, आर्थिक योजनाओं और जीवन शैली से जुड़े निर्णय स्वयं ले सकते हैं।

संयुक्त परिवारों में जहां कई बार निर्णय परिवार के वरिष्ठ सदस्यों की इच्छा और पारंपरिक नियमों के अनुसार लिए जाते थे, वहीं न्यूक्लियर परिवारों में व्यक्तिगत पसंद और आवश्यकताओं को अधिक महत्व दिया जाता है। इससे व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए न्यूक्लियर परिवार व्यक्तिगत विकास और अपनी पहचान स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है। व्यक्ति अपनी क्षमताओं और रुचियों के अनुसार जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित कर सकता है।

हालांकि व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है, ताकि परिवार में भावनात्मक संबंध और सहयोग की भावना बनी रहे।

2. बेहतर आर्थिक नियोजन (Better Economic Planning)

न्यूक्लियर परिवारों में आर्थिक संसाधनों का प्रबंधन अपेक्षाकृत सरल और प्रभावी हो सकता है। परिवार के सदस्यों की संख्या सीमित होने के कारण आय और खर्च का बेहतर नियोजन संभव होता है।

छोटे परिवार अपनी आर्थिक प्राथमिकताओं के अनुसार शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और बचत से संबंधित निर्णय आसानी से ले सकते हैं। पति-पत्नी अपनी आय का उपयोग अपने लक्ष्यों और आवश्यकताओं के अनुसार कर सकते हैं।

आधुनिक समय में बढ़ती जीवन-यापन लागत और आर्थिक प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे परिवार कई लोगों को अधिक व्यावहारिक लगते हैं। कम सदस्यों के कारण बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर पर अधिक ध्यान दिया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त न्यूक्लियर परिवारों में आर्थिक निर्णय लेने की प्रक्रिया तेज होती है, क्योंकि निर्णय के लिए अधिक सदस्यों की सहमति की आवश्यकता नहीं होती।

3. लैंगिक समानता (Gender Equality)

पारिवारिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव लैंगिक समानता के रूप में देखा जा सकता है। आधुनिक न्यूक्लियर परिवारों में पति-पत्नी के बीच जिम्मेदारियों का अधिक संतुलित विभाजन देखने को मिलता है।

महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में वृद्धि ने परिवार में उनकी भूमिका को परिवर्तित किया है। अब महिलाएं केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आर्थिक निर्णयों और पारिवारिक योजनाओं में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं।

न्यूक्लियर परिवारों में पति और पत्नी के बीच सहयोग तथा साझेदारी की भावना विकसित होने की संभावना अधिक होती है। बच्चों के पालन-पोषण, घरेलू कार्यों और आर्थिक जिम्मेदारियों में दोनों की भागीदारी आधुनिक परिवार व्यवस्था की प्रमुख विशेषता बन रही है।

इस प्रकार पारिवारिक परिवर्तन ने महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता, निर्णय क्षमता और सामाजिक पहचान प्राप्त करने में सहायता प्रदान की है।

नकारात्मक प्रभाव (Negative Effects)

1. वृद्धजनों की समस्या (Problems of Elderly People)

संयुक्त परिवार व्यवस्था के कमजोर होने का सबसे महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव वृद्धजनों की स्थिति पर पड़ा है। पारंपरिक संयुक्त परिवारों में वृद्ध माता-पिता को परिवार के भीतर सम्मान, देखभाल और भावनात्मक सहयोग प्राप्त होता था।

न्यूक्लियर परिवारों के बढ़ने के कारण कई वृद्ध लोग अपने बच्चों से अलग रहने लगे हैं। रोजगार और शिक्षा के कारण युवा पीढ़ी अक्सर दूसरे शहरों या देशों में रहने लगती है, जिससे वृद्धजनों में अकेलेपन और असुरक्षा की भावना बढ़ सकती है।

वृद्धावस्था में केवल आर्थिक सहायता ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि भावनात्मक जुड़ाव और सामाजिक सहयोग भी आवश्यक होता है। संयुक्त परिवारों के कमजोर होने से यह सहायता प्रणाली सीमित हुई है।

इस समस्या के समाधान के लिए परिवारों में पीढ़ियों के बीच संवाद बनाए रखना और वृद्धजनों के प्रति सामाजिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व को मजबूत करना आवश्यक है।

2. बच्चों के समाजीकरण पर प्रभाव (Impact on Child Socialization)

परिवार बच्चों के समाजीकरण का पहला और सबसे महत्वपूर्ण माध्यम होता है। संयुक्त परिवारों में बच्चों को माता-पिता के अतिरिक्त दादा-दादी, चाचा-चाची और अन्य रिश्तेदारों से भी सीखने का अवसर मिलता था।

न्यूक्लियर परिवारों में बच्चों का सामाजिक अनुभव अपेक्षाकृत सीमित हो सकता है। उन्हें विभिन्न पीढ़ियों के अनुभव, पारिवारिक कहानियों, परंपराओं और सामाजिक व्यवहारों को सीखने के अवसर कम मिलते हैं।

दादा-दादी और बुजुर्गों के साथ रहने से बच्चों में धैर्य, सम्मान, सहयोग और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास होता था। न्यूक्लियर परिवारों में इन अवसरों की कमी को अन्य सामाजिक माध्यमों और पारिवारिक प्रयासों द्वारा पूरा करना आवश्यक है।

हालांकि न्यूक्लियर परिवारों में माता-पिता बच्चों की शिक्षा और व्यक्तिगत विकास पर अधिक ध्यान दे सकते हैं, लेकिन सामाजिक अनुभवों का विस्तार एक चुनौती बनी रहती है।

3. सामाजिक अलगाव (Social Isolation)

न्यूक्लियर परिवारों का एक अन्य नकारात्मक प्रभाव सामाजिक अलगाव की भावना है। संयुक्त परिवारों में व्यक्ति को निरंतर पारिवारिक सहयोग और सामाजिक संपर्क प्राप्त होता था, जबकि छोटे परिवारों में सामाजिक संबंधों का दायरा सीमित हो सकता है।

आधुनिक व्यस्त जीवन शैली, रोजगार संबंधी दबाव और शहरी जीवन की प्रतिस्पर्धा के कारण लोगों के पास सामाजिक संबंधों के लिए कम समय बचता है। इससे कई बार व्यक्ति अकेलेपन और भावनात्मक दूरी का अनुभव कर सकता है।

विशेष रूप से बच्चों, वृद्धजनों और गृहणियों के लिए सामाजिक सहयोग की कमी चुनौतीपूर्ण हो सकती है। डिजिटल संचार के बढ़ने के बावजूद वास्तविक सामाजिक संपर्क और भावनात्मक सहयोग का महत्व बना रहता है।

10. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय समाज में पारिवारिक संरचना का परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। परिवार जैसी प्राचीन और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था समय के साथ बदलती सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार अपने स्वरूप में परिवर्तन करती रही है। संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर परिवार की ओर बढ़ता संक्रमण केवल परिवार के

आकार या निवास व्यवस्था में परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज में हो रहे व्यापक आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण और वैश्वीकरण का परिणाम है।

परंपरागत संयुक्त परिवार व्यवस्था भारतीय सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण आधार रही है। इसने आर्थिक सहयोग, सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक संरक्षण और पीढ़ियों के बीच संबंधों को मजबूत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संयुक्त परिवार में व्यक्ति को भावनात्मक सहयोग, सामाजिक सुरक्षा और पारिवारिक अनुभवों का लाभ प्राप्त होता था। विशेष रूप से वृद्धजनों और बच्चों के लिए यह व्यवस्था अत्यंत सहायक रही।

हालांकि आधुनिक सामाजिक परिस्थितियों ने परिवार के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। औद्योगिकीकरण और नगरीकरण के कारण रोजगार और शिक्षा के अवसरों के लिए लोगों का स्थान परिवर्तन बढ़ा, जिससे छोटे परिवारों का विकास हुआ। शिक्षा के विस्तार और आधुनिक विचारधारा ने व्यक्तियों में आत्मनिर्भरता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समानता की भावना को मजबूत किया। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और बदलती जीवन शैली ने भी न्यूक्लियर परिवारों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एकल परिवारों ने आधुनिक समाज में कई सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं। उन्होंने व्यक्तियों को अपने जीवन संबंधी निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान की है, आर्थिक नियोजन को अधिक प्रभावी बनाया है और पति-पत्नी के बीच समानता आधारित संबंधों को बढ़ावा दिया है। छोटे परिवारों में माता-पिता बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

इसके बावजूद न्यूक्लियर परिवार व्यवस्था के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं। संयुक्त परिवारों के कमजोर होने से वृद्धजनों के लिए भावनात्मक और सामाजिक सुरक्षा में कमी आई है। बच्चों को परिवार की विभिन्न पीढ़ियों से मिलने वाले अनुभव, संस्कार और पारंपरिक ज्ञान के अवसर सीमित हुए हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक जीवन की व्यस्तता और सीमित सामाजिक संपर्क के कारण सामाजिक अलगाव और अकेलेपन की समस्या भी बढ़ी है।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि परिवार संस्था समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि बदलती परिस्थितियों के अनुसार उसका स्वरूप परिवर्तित हो रहा है। संयुक्त परिवार और न्यूक्लियर परिवार दोनों ही अपनी-अपनी सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार महत्वपूर्ण हैं। आधुनिक समाज में आवश्यकता इस बात की है कि न्यूक्लियर परिवारों की स्वतंत्रता और सुविधाओं के साथ-साथ

संयुक्त परिवार के सकारात्मक मूल्यों जैसे सहयोग, सम्मान, भावनात्मक जुड़ाव और पारिवारिक उत्तरदायित्व को भी बनाए रखा जाए।

अंततः कहा जा सकता है कि परिवार का स्वरूप चाहे परिवर्तित हो जाए, लेकिन परिवार के मूल तत्व—प्रेम, सहयोग, सुरक्षा, सामाजिकरण और भावनात्मक संबंध—हमेशा मानव समाज के लिए आवश्यक रहेंगे। भारतीय समाज में भविष्य की पारिवारिक व्यवस्था संभवतः ऐसी होगी जिसमें आधुनिक जीवन मूल्यों और पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जाएगा। यही संतुलन परिवार संस्था को बदलते सामाजिक परिवेश में प्रभावी और स्थायी बनाए रखने में सहायक होगा।

11. सुझाव (Suggestions)

भारतीय समाज में पारिवारिक संरचना तेजी से परिवर्तित हो रही है। संयुक्त परिवारों के स्थान पर न्यूक्लियर परिवारों का बढ़ता प्रचलन आधुनिक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का परिणाम है। इस परिवर्तन ने जहां व्यक्तियों को स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता प्रदान की है, वहीं वृद्धजनों की देखभाल, बच्चों के समाजीकरण और पारिवारिक संबंधों की निरंतरता जैसी चुनौतियां भी उत्पन्न की हैं। इसलिए वर्तमान पारिवारिक व्यवस्था को अधिक संतुलित और प्रभावी बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझावों पर ध्यान देना आवश्यक है।

सबसे पहले, वृद्धजनों के लिए सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया जाना चाहिए। संयुक्त परिवारों के कमजोर होने के कारण अनेक वृद्ध व्यक्ति भावनात्मक और सामाजिक सुरक्षा की कमी का अनुभव करते हैं। वृद्धावस्था में केवल आर्थिक सहायता ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि उन्हें परिवार के सदस्यों का प्रेम, सम्मान और सहयोग भी आवश्यक होता है। इसलिए सरकार और समाज को वृद्धजनों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, सामाजिक सहायता योजनाएं और सुरक्षित जीवन वातावरण उपलब्ध कराने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। साथ ही परिवारों को भी वृद्ध सदस्यों के अनुभवों और योगदान का सम्मान करते हुए उन्हें पारिवारिक जीवन का सक्रिय हिस्सा बनाए रखना चाहिए।

परिवारों में विभिन्न पीढ़ियों के बीच संवाद को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। आधुनिक जीवन की व्यस्तता और तकनीकी निर्भरता के कारण परिवार के सदस्यों के बीच प्रत्यक्ष संवाद कम होता जा रहा है। इससे पीढ़ियों के बीच विचारों और भावनाओं की दूरी बढ़ सकती है। यदि परिवार में

माता-पिता, बच्चों और वृद्ध सदस्यों के बीच नियमित संवाद और सहभागिता बनी रहे, तो पारिवारिक संबंध अधिक मजबूत हो सकते हैं। बुजुर्गों के अनुभव और युवाओं की आधुनिक सोच का समन्वय परिवार को अधिक संतुलित और समृद्ध बना सकता है।

बच्चों के नैतिक एवं सामाजिक विकास के लिए पारिवारिक सहभागिता अत्यंत आवश्यक है। परिवार बच्चों के समाजीकरण का पहला और सबसे महत्वपूर्ण माध्यम होता है। माता-पिता को बच्चों की शिक्षा के साथ-साथ उनके नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारियों और मानवीय संवेदनाओं के विकास पर भी ध्यान देना चाहिए। बच्चों को परिवार की परंपराओं, संस्कारों और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ना आवश्यक है, ताकि वे आधुनिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी समझ सकें।

आधुनिक जीवन शैली के साथ पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों का संतुलन बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है। आधुनिकता ने व्यक्तियों को स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत विकास के अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इसके साथ परिवार में सहयोग, सम्मान, प्रेम और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को बनाए रखना भी आवश्यक है। न्यूक्लियर परिवारों में भी संयुक्त परिवार के सकारात्मक तत्वों जैसे पारस्परिक सहयोग, वृद्धजनों का सम्मान और सामूहिक उत्तरदायित्व को अपनाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त परिवारों में जिम्मेदारियों का संतुलित विभाजन होना चाहिए। आधुनिक समाज में पति और पत्नी दोनों आर्थिक एवं सामाजिक भूमिकाओं का निर्वहन कर रहे हैं, इसलिए घरेलू कार्यों, बच्चों की देखभाल और आर्थिक जिम्मेदारियों में समान भागीदारी आवश्यक है। इससे परिवार में समानता, सहयोग और आपसी सम्मान की भावना मजबूत होगी।

अंततः कहा जा सकता है कि पारिवारिक संरचना में परिवर्तन को रोका नहीं जा सकता, क्योंकि यह सामाजिक विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है। आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिक परिवार व्यवस्था में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पारिवारिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। परिवार का स्वरूप चाहे संयुक्त हो या न्यूक्लियर, उसमें प्रेम, सहयोग, सम्मान, भावनात्मक जुड़ाव और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का संरक्षण आवश्यक है। यही मूल्य परिवार संस्था को बदलते सामाजिक परिवेश में मजबूत और प्रभावी बनाए रख सकते हैं।

संदर्भ सूची (References)

1. Durkheim, E. (1893). *The Division of Labour in Society*. London: Macmillan.
2. Parsons, T., & Bales, R. F. (1955). *Family, Socialization and Interaction Process*. Glencoe: The Free Press.
3. Karve, I. (1965). *Kinship Organization in India*. Bombay: Asia Publishing House.
4. Srinivas, M. N. (1966). *Social Change in Modern India*. Berkeley: University of California Press.
5. Kapadia, K. M. (1966). *Marriage and Family in India*. London: Oxford University Press.
6. Shah, A. M. (1998). *The Family in India: Critical Essays*. New Delhi: Orient Longman.
7. Uberoi, Patricia. (1993). *Family, Kinship and Marriage in India*. New Delhi: Oxford University Press.
8. Desai, I. P. (1975). *Modernization of Family and Social Change in India*. New Delhi: Indian Council of Social Science Research.
9. Giddens, Anthony. (2009). *Sociology*. Cambridge: Polity Press.
10. Goode, William J. (1963). *World Revolution and Family Patterns*. New York: Free Press.
11. Cherlin, Andrew J. (2004). *The Deinstitutionalization of American Marriage*. *Journal of Marriage and Family*, 66(4), 848-861.
12. Sharma, Ram Ahuja. (2014). *Indian Social System*. New Delhi: Rawat Publications.
13. Béteille, André. (2002). *Society and Politics in India: Essays in a Comparative Perspective*. New Delhi: Oxford University Press.
14. Government of India. (2011). *Census of India: Social and Cultural Tables*. New Delhi: Office of the Registrar General and Census Commissioner, India.

15. Ministry of Statistics and Programme Implementation. (2020). *Women and Men in India: A Statistical Compilation*. Government of India, New Delhi.
16. Agarwal, Bina. (1994). *A Field of One's Own: Gender and Land Rights in South Asia*. Cambridge: Cambridge University Press.
17. Bottomore, T. B. (1972). *Sociology: A Guide to Problems and Literature*. London: George Allen & Unwin.
18. Macionis, John J. (2012). *Sociology*. New Jersey: Pearson Education.
19. Yogendra Singh. (1973). *Modernization of Indian Tradition*. New Delhi: Thomson Press.
20. Ritzer, George. (2011). *Sociological Theory*. New York: McGraw-Hill.



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

R
S
E
A
R
C
H
G
A
T
E
W
A
Y

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



A
R
O
G
Y
A
M
O
N
L
I
N
E

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER



COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



- BLUE** Calms your Child's Mind & Body
- YELLOW** Promotes Concentration, Stimulates the Memory
- PINK** Evokes Empathy, makes your Child Calm
- RED** Excites and energizes your Child's body
- GREEN** Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com



Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMSST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE